ww[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 33
सृष्टि संवत् 1960853114
17 नवम्बर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 33, 14/17 नवम्बर 2013 तदनुसार 2 माघ सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ! वेदोद्यान चलें

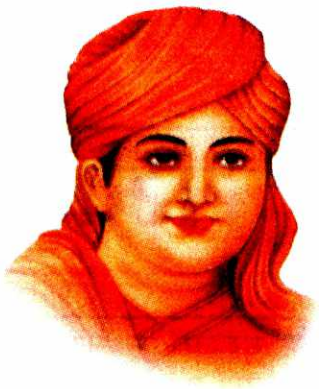

-ले० श्री भद्रसेन 182-शालीमार नगर होशियारपुर

(गतांक से आगे)

वैसे यजुर्वेद के पद्यात्मक छन्द भी गद्य से प्रभावित हैं। कृष्ण यजुर्वेद में ब्राह्मण-(व्याख्या) भाग से मिश्रित गद्य-पद्यमयी रचना है, अत: इस आख्यान का भी यही भाव है, कि कृष्ण शब्द ब्राह्मण मिश्रित का वाचक है. यह सत्य है कि काव्य में विषय को सरलता तथा सरसता से समझाने के लिए अलंकार (शब्द-अर्थ के आधार पर विषय को सुन्दर बनाने वाले तत्त्व) और आख्यान आदि के द्वारा सरस शैली को अपनाया जाता है। हां, समझाने, सरस बनाने का प्रकार युक्ति संगत अवश्य ही होना चाहिए, नहीं तो शरीर तो अवश्य ही सुन्दर वस्त्रों और गहनों से सज जाएगा, पर आत्मा मर जाएगी। तब वह अधिक दिन पाठकों के अध्ययन का विषय न बनने से अमर न हो सकेगा।

6. यजुर्वेद का वर्ण्य विषय

इस जगत के विधाता को अपनी हर रचना हर तरह से प्यारी है। वैसे भी इस जग का रचयिता सर्वेश्वर, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् और सर्वगुण सम्पन्न है, अत: उसकी रचना सर्वथा सर्वगुण सम्पन्न ही होगी। इसीलिए वेद इस जगत के सम्बन्ध में एक सही दृष्टिकोण देता है। वेद आशा और उत्साह का संचार करते हुए इस संसार तथा जीवन को समुन्नत और सफल बनाने के लिए भावना देता है। आशामय, स्पृहणीय जीवन के स्वरूप को प्रदर्शित करते हुए वेद ने कहा है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समा:।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥40,2॥

कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करो। कर्म के बिना इस कर्म क्षेत्र में उद्धार का अन्य कोई मार्ग नहीं है (कर्मफलदाता परमेश्वर कर्म के अनुरूप ही प्रगति एवं प्रगति के साधन देता है)। अत: कर्म करने वाले! तू विश्वास रख। कर्म करने से यहां कीचड़ की तरह उसमें अधिक-से-अधिक फंसता नहीं जाएगा।

यह सौ वर्ष का जीवन विकलांगों का सा दु:खभरा, विवश, घृणामय न हो, अपितु-

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् शुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरद: शतम्, जीवेम शरद: शतम्,
शृणुयाम शरद: शतम्, प्रब्रवाम शरद: शतम्,
मदीना: स्याम शरद: शतम्, भूयश्य शरद: शतात्॥ 36,24,॥

हम आंखों से देखते हुए, कानों से सुनते हुए, वाणी से बोलते और रस ग्रहण करते हुए सौ वर्ष जीएं। शत वर्ष पर्यन्त ही नहीं, बल्कि इससे भी अधिक काल तक सर्वांगपूर्ण स्वस्थ शरीर से जीवन का रस लें। अदीनता के वातावरण में स्वस्थ स्वच्छ, स्वाधीन श्वास लेते हुए सर्वविध विकासों से विकसित होकर संसार में जीएं।

प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन शान्तियुक्त, विकासशील और सुरक्षित देखना चाहता है। यह तभी सम्भव है, जब राज्य तथा समाज की व्यवस्थायें उचित, स्थिर सुदृढ़ एवं उन्नतिशील हों। आज प्रजातन्त्र का युग है, हम स्वयं अपने शासक और व्यवस्थापक हैं, क्योंकि हमें अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करने का अनेक बार अवसर मिलता है। निर्वाचन के अवसर पर हमारे सामने एक गम्भीर समस्या आती है और हम दुविधा में पड़ जाते हैं, कि अपना अनमोल मत किसको दें ? वेद ने हमारी इस दुविधा का हल बड़े सरल और संक्षिप्त शब्दों में किया है, कि

मा व: स्तेन ईशत मा अघशंस: यजु. 1,1

तुम (हम) पर चोर और पाप का प्रशंसक शासन न करे। समाज के नियमों का उल्लघंन कर दिन या रात में दूसरों के अधिकार और पदार्थ का उनकी इच्छा के बिना ग्रहण करना चोरी है। समाज के नियमों का उल्लंघन ही पाप है और ऐसा करने वाला स्तेन कहलाता है। पाप करने वालों का जो समर्थक है, उन्हें जो आश्रय देता है, छिपाता है, उनकी रक्षा करता है या सहायता देता है, वह अघशंस है। ऐसा शासक-भक्षक, शोषक होकर स्वयं या दूसरों द्वारा प्रजा का खून चूस कर अव्यवस्था को ही जन्म देगा। अत: जो संविधान एवं नियमों के प्रति निष्ठावान हो, जो नियमों का किसी प्रकार से भी उल्लंघन नहीं करता तथा उल्लंघन करने वालों का समर्थक न हो, वही प्रत्याशी हमारा प्रतिनिधि होना चाहिए। भागलपुर का अन्धे बनाने का काण्ड हो या कालांवाली और नरवाना का शराब काण्ड या इन्द्री का नकली खाद का घोटाला, ये सब अपराध सिद्ध करते हैं, कि बड़ों के सहयोग के बिना ऐसे जघन्य कार्य नहीं होते हैं।

आज के न्यायालयों में चलने वाले अभियोगों में से कम से कम 80 प्रतिशत अभियोग मार-पिटाई (बदले की कारवाई) सम्बन्धी होते हैं। इन सबके मूल में एक व्यक्ति या दल द्वारा दूसरे की किसी वस्तु पर बलात् अधिकार कर लिया जाता है। तब पहला दूसरे से बदला लेने के लिए उस पर प्रत्याक्रमण करता है और बात बढ़ जाती है। अपने प्रति किए गए अन्याय के लिए राज्य और न्यायालय का आश्रय न लेकर स्वयं अन्याय के निवारण के लिए उद्यत हो जाने से बात नए रूप में सामने आती है और तब दोनों अपराध के भागीदार बन जाते हैं। अतएव वेद ने ठीक दिशा देते हुए कहा है-

यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्म:
(15,15-19; 16, 64-66)

जो कोई तुम से द्वेष करता है या (अपने प्रति किए गए अन्याय के कारण) जिससे तुम द्वेष करते हो, उस द्वेष को न्याय के जबड़ों में सौंपते हैं अर्थात् अपने हाथ में स्वयं न्याय व शासन को लेना सामाजिक अव्यवस्था और रोग को बढ़ावा देना है। **(क्रमश:)**

संस्कारों का साक्षात्कार एवं पुनर्जन्म

स्व० महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव सुन्दर नगर

संस्कारों के साक्षात्कार से पूर्वजन्म का ज्ञान होता है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी 'उपदेश मंजरी' में (छठा उपदेश) लिखते है-'.....जीव की शरीर चेष्टा होने से पूर्व प्रथम हमें प्रत्यक्ष होता है, फिर आत्मा पर संस्कार होता है, फिर स्मृति होती है और पश्चात् किसी कार्य के विषय में प्रवृत्ति-निवृत्ति होती है, यह प्रकार सर्वत्र प्रतीत होता है। अब देखो कि शरीर योनि में से बच्चा बाहर पड़ने के पूर्व पेट में था, बाहर गिरते ही श्वास लेने वा रोने लगता है, तो यह प्रवृत्ति उसे पूर्व संस्कारों के बिना कैसे होगी ? माता का स्तन खींचकर दूध पीने लग जाता है, यह प्रवृत्ति कहां से हुई ? दूध के विषय में तृप्त होने पर निवृत्त होता है, तो यह निवृत्ति भी किस प्रकार की है ? माता ने कुछ धमकी दी, तो झट बच्चा समझता है, तो यह पूर्व संस्कारों के बिना कैसे होगा ? इससे निश्चयपूर्वक पूर्वजन्म था, यह प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों प्रमाणों से सिद्ध होता है। पुनरपि, सब चराचर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का क्रम यदि देखा जाए तो उस सादृश्य से जीव सृष्टि का भी पूर्वजन्म था। यह हमारा मध्यम जन्म है और मोक्ष होने तक अभी भी जन्म होने वाले हैं। इस परंपरा से इस मध्य-जन्म की संभावना तभी हुई जब कि पूर्वजन्म पहले था, क्योंकि यदि कूएं में जल न हो तो डोल में पानी कहां से आवे ?'

पूर्व जन्म की स्मृति न रहने का कारण संस्कारों की निर्बलता है तथा इसके मुख्यत: दो कारण है। एक तो ज्ञान के समय उनकी गहरी छाप न पड़ना और दूसरा आवश्यकता न होने के कारण उनके बार-बार न उभरने के कारण भी वे शिथिल हो जाते हैं। यदि संस्कारों की निर्बलता के सभी कारण दूर हो जाएं तो पूर्वजन्म की स्मृति हो सकती है और बहुत से लोगों को होती भी है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि किसी बीती हुई घटना को याद करने के लिए हमें उतना ही समय लगेगा जितना कि उसे बीते हुए हो चुका है. क्योंकि उसे याद आने से पहले की प्रत्येक छोटी-छोटी बात भी याद आऐगी जो उस समय से अब तक घटित हुई है। अत: जितना समय किसी घटना के घटित होने में लगता है उतना ही उनके याद करने में लगेगा। इससे यह बात मनन करने योग्य है कि हमें प्रत्येक उस संस्कार को आत्मसात् करना होगा जो-जो हमारे सूक्ष्म शरीर पर पड़े हों.....अन्त:करण पर पड़े किसी भी संस्कार के जागृत होने के लिए उपयुक्त उद्बोधक चाहिए तथा उद्बोधक के अभाव में उन संस्कारों का स्मरण नहीं रहता है। और यदि उद्बोधक का अभाव न रहे तो पुरानी घटनाएं स्मरण में आ जाती हैं क्योंकि स्मृति का कभी अभाव नहीं होता है.....जिससे स्मृति, राग, द्वेष तथा सुख-दु:ख प्राप्त होते हैं और धार्मधर्मरूप अदृष्ट का नाम संस्कार है। इस प्रकार स्मृति एवं राग-द्वेष की चित्त में रहने वाली वासना और सुख-दु:ख रूप भोग के जनक धर्माधर्मरूप प्रारब्ध कर्म ये दोनों संस्कार हैं। हालांकि बहुत बार साधारण जनों को भी संस्कारों के उद्बोद्धित होने पर पूर्वजन्म की स्मृतियां आते हुए देखी गई हैं मगर जहां तक योगी की बात है सो जो योगी संयम के द्वारा उक्त दोनों प्रकार के संस्कारों को साक्षात् कर लेता है उसे पूर्वजन्म का ज्ञान हो जाता है। जिन संस्कारों से पूर्व अनुभव किए हुए पदार्थों में स्मृति, इच्छा तथा द्वेष उत्पन्न होता है उन्हें 'वासना' और जिनसे जन्म, आयु तथा भोग की प्राप्ति होती है उन्हें 'धर्माधर्म' कहते हैं।

योगदर्शन का सूत्र है-संस्कारसाक्षात्करणात्पूर्वजातिज्ञानम॥ (3-18) अर्थात् योगी संयम के माध्यम से संस्कारों का साक्षात्कार करके 'पूर्वजन्म का ज्ञान' प्राप्त कर लेता है। इस सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि व्यास जी ने इन दो प्रकार के संस्कारों की विस्तृत जानकारी दी है। हम उस व्याख्या का वह साररूप यहां पर प्रस्तुत करना चाहते हैं जो श्री राजवीर शास्त्री जी ने अपने भाष्य में लिखा है-'जीवात्मा जो भी शुभाशुभ कर्म करता है, उसके संस्कार चित्त-पटल पर अंकित होते हैं। और यह चित्त सूक्ष्मशरीर का एक घटक है जो जीवात्मा के साथ जन्म-जन्मान्तरों में साथ जाता है। सूक्ष्म-शरीर के नाश से इस सूक्ष्म-शरीर का नाश नहीं होता है। जैसे ग्रामोफोन के प्लेट के रिकार्ड होते हैं, वैसे ही जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार चित्त पर अंकित होते रहते हैं। और वे संस्कार दो प्रकार के होते हैं-(1) एक स्मृति और अविद्यादि क्लेशों के कारण-भूत वासनारूप संस्कार और (2) दूसरे शुभाशुभ कर्मों के संस्कार, जिनके परिणामस्वरूप जीवात्मा सुख-दु:ख भोगता है। उन संस्कारों मे संयम करने से योगी को उनका साक्षात्कार हो जाता है और वे संस्कार जिस देश, काल तथा निमित्त से बने हैं, वे सब योगी को स्मरण हो जाते हैं। यही पूर्वजन्म का ज्ञान है। अनेक अबोध बालक जिनके संस्कार अच्छे होते हैं, वे अपने पिछले जन्मों की बातें बता देते हैं और जैसे-जैसे इस जन्म के संस्कारों का आवरण पड़ता जाता है, वैसे-वैसे वे पूर्वजन्म की बातों को भूल जाते हैं। योगीपुरूष संयम के द्वारा उस आवरण को हटा देता है, जिससे वह चित्त-पटल पर अंकित संस्कारों को समझने में समर्थ हो जाता है। व्यासभाष्य में अगले जन्म के कारणभूत संस्कारों के जानने से भावी जन्म के जानने की बात भी लिखी है, वह भी संस्कारों को जानने के कारण ही होता है। और यहां व्यासभाष्य में पूर्वजन्म को जानने के विषय में दो ऋषियों का प्राचीन आख्यान भी दिया है, जिससे स्पष्ट है कि योगी संस्कारों के आश्रय से जन्म-जन्मान्तरों की बातों को जान लेता है।'

मनु महाराज कहते हैं-**वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च। अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम्॥** (मनु० 4-148) अर्थात् मनुष्य निरन्तर वेद का अभ्यास करने से, आत्मिक तथा शारीरिक पवित्रता से तथा तपस्या से और प्राणियों के साथ द्रोहभावना न रखते हुए अर्थात् अंहिसाभावना रखते हुए पूर्वजन्म की अवस्था को स्मरण कर लेता है। योगदर्शन की बात हम ऊपर कह आए हैं। योगदर्शन में अन्यत्र भी कहा है-**अपरिग्रहस्थैर्य जन्मकथंता संबोध:।** (2-39) अर्थात् इस योगी को (जन्मकथन्ता सम्बोध) होता है। मैं कौन था, मैं कैसा था, यह क्या है, यह कैसे हुआ है, हम कौन होंगे, कैसे होंगे ? इस प्रकार, इस योगी को पूर्वकाल, परकाल और मध्यकाल की अपने जन्म विषयक जिज्ञासा स्वत: उदित हो जाती है। ये पूर्वलिखित सिद्धियां यम विषयक स्थिरता होने पर उदित होती है। 'संस्कारों का साक्षात्कार होने से पूर्वजन्म का ज्ञान होता है।' इसे दार्शनिक दृष्टि से समझने के लिए हम डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (संस्कार-चन्द्रिका पृ० 505) जी के विचारों को यथातथ्य प्रस्तुत करना चाहते हैं। वे लिखते हैं-'पुनर्जन्म के विषय में अनेक सन्देह की बातें उठ खड़ी होती हैं। सबसे बड़ा सन्देह यह किया जाता है कि पुनर्जन्म के मानने वाले यह नहीं समझा पाते कि जिन लोगों को पिछले जन्म की स्मृति हो आती है वह किस तरह आती है ? शरीर के मर जाने के बाद स्मृति का आधार मस्तिष्क तो नष्ट हो जाता है, फिर स्मृति के आधार मस्तिष्क के मिट जाने पर स्मृति कहां से उठ खड़ी होती है ? इस शंका का मूल यह समझना है कि हम जिन स्थूल इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे स्थूल इन्द्रियां ही सब प्रकार के ज्ञान का साधन हो सकती है, मनुष्य के पास इनके अतिरिक्त ज्ञान का कोई अन्य साधन नहीं है। हमारा यह समझना भ्रममूलात्मक है। 'मनोविश्लेषण-वाद' के प्रवर्तक सिगमंड फ्रायड थे, परन्तु उनके साथ युंग भी मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तकों में से थे। एक तरह से फ्रायँड तथा युंग-इन दोनों को मनोविश्लेषणवाद का पिता कहा जा सकता है। युंग का कहना है कि जिस प्रकार हमारी इन्द्रियों में निहित 'ज्ञान-चेतना' हमारे लिए ज्ञान प्राप्त करने का साधन हैं, उसी प्रकार बिना इन्द्रियों की सहायता से हमारी 'अज्ञात-चेतना' भी हमारे लिए ज्ञान प्राप्त करने का बड़ा भारी साधन है। 'ज्ञान-चेतना' उस क्षेत्र में काम करती है जो देश तथा काल के बन्धन से बन्धा हुआ है, 'अज्ञात-चेतना' उस क्षेत्र में काम करती है जिसमें देश काल का बन्धन नहीं है, वह देश तथा काल को लांघ कर जहां चाहती है विचरती है। इस प्रकार 'अज्ञात-चेतना' उस क्षेत्र का साक्षात्कार कर सकती है, जो 'ज्ञात-चेतना' के लिए 'भूत तथा भविष्यत्' काल है, और जिन कालों में 'ज्ञात-चेतना' का प्रवेश नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

सत्यवादी और आस्तिक स्वामी दयानन्द

आस्तिक्य भावना, ईश्वर विश्वास तथा सत्याचरण का चोली दामन का साथ है। ईश्वर भक्त यदि सत्य न मानें, न कहे और सत्य पर न चले तो वह उपहासक भले ही हो परन्तु उपासक नहीं कहला सकता। आज ईश्वर की चर्चा करने वाले अनेकों व्यक्ति मिलते हैं। परन्तु उनके जीवन में उसी अनुपात से सत्य का दर्शन नहीं होता। इसीलिए वे न अपना और न अन्य किसी का सुधार कर पाते हैं। सत्य की चर्चा करना और सत्य का अनुष्ठान दोनों भी पृथक्-पृथक हैं। सत्य पर व्याख्यान देना बड़ा सरल है और लोगों के लिए सत्य की प्रेरणा करना भी कोई कठिन नहीं परन्तु स्वयं सत्य पर आरूढ़ होना और अपने सम्बन्ध में सत्य बात को सुनकर सहन करना तथा स्वीकार करना यह बड़ा ही कठिन है। महर्षि दयानन्द के जीवन में हम जितना भी पढ़ते हैं और उस पर विचार करते हैं तो हमें सिवाय सत्य के और कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता। उन्होंने अपने आपको सत्यमय ही बना लिया था। यही कारण है कि वे पूर्ण निर्भीक थे पक्षपात रहित थे और बिना किसी की परवाह किए सत्य बात कह देते थे। उनके हृदय में सभी के लिए सच्चा प्रेम और स्नेह भी इसी कारण से था क्योंकि उन्होंने सत्य के साक्षात दर्शन किए थे और सत्य को अपने जीवन में अपनाया था। सत्य ज्ञान और सत्य कर्म का अनुष्ठान मनुष्यों के सारे बन्धनों को काटकर उसे पूर्ण स्वतन्त्र बनाता है। ऋषिवर को हम पूर्ण स्वतन्त्र पाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में उनकी प्रतिभा के कौशल को देखा जा सकता है और यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उन्होंने जो कुछ और जैसा अनुभव किया, उसे कहने में कभी संकोच नहीं किया। अपने और पराये का कोई प्रश्न उनके सामने कभी नहीं था। अपने पूना प्रवचन के व्याख्यानों में इतिहास विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा भीष्म जैसे विद्वान और धर्मवादी पुरूष पक्षपात के रोग से ग्रसित हो गए थे। उनको उचित तो यह था कि वह मध्यस्थ होकर दोनों पक्षों का न्याय करते और अपराधियों और अन्यायियों को दण्ड दिलाते, परन्तु ऐसा न करके उन्होंने अन्यायियों का पक्ष करके कुरूवंश का नाश होने दिया। भीष्म कहते हैं कि-

अर्थस्य पुरूषों दासो दासस्त्वर्थों न कस्यचित्।
इति मत्वा महाराज। बद्धोस्म्यर्थेन कौरवैः।।

भीष्म पितामह जैसे योग्य मनुष्य का यह कहना कि मैं अर्थ से बंधा हुआ कौरवौं की ओर से युद्ध करने लगा हूं। कैसा घृणा के योग्य मालूम होता है। इस देश में यदि घर में फूट उत्पन्न होकर कुल का विनाश हो गया तो आश्चर्य की कौन सी बात है?

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी एक दिन अपने व्याख्यान में पुराणों की असम्भव बातों का खण्डन कर रहे थे। पादरी स्काट के अतिरिक्त कलेक्टर और कमीश्नर आदि अंग्रेज भी उपस्थित थे, स्वामी जी ने जब पौराणिकों की पंचकुमारी तथा उनके वृतान्त का वर्णन किया तो कलेक्टर कमिशनर आदि बहुत हंसे और प्रसन्नता प्रकट करते रहे। स्वामी जी ने कहा देखो पुराणियों की बुद्धि द्रौपदी के पांच पति कराके उसे कुंवारी कहते हैं ऐसा ही कुन्ती तारा आदि का भी वर्णन किया। परन्तु कुछ देर के पश्चात पैंतरा बदला कि पुराणियों कि तो यह लीला अब किरानियों की लीला सुनो। यह ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुंवारी के पुत्र बतलाते हैं और दोष उस सर्वज्ञ शुद्ध परमात्मा पर लगा कर तनिक लज्जित नहीं होते। यह सुनते ही कलेक्टर कमिशनर के चेहरे क्रोध के कारण लाल हो गए। परन्तु व्याख्यान जोर शोर से चलता रहा और अन्त तक ईसाई मत का खण्डन होता रहा। अगले दिन खजानची साहब कमिश्नर की कोठी पर बुलाए गए। उनसे कहा गया कि अपने पंडित को कह दो कि अधिक खण्डन न किया करें, हम ईसाई तो सभ्य हैं परन्तु मूर्ख हिन्दू तथा मुसलमान जोश में आए तो व्याख्यान बंद हो जाएंगे। कोषाध्यक्ष ने कहा कि स्वामी जी को यह संदेश पहुंचा दूंगा। परन्तु न उन्हें साहस हुआ न किसी और को, निदान एक नास्तिक के जिम्मे लगाया गया कि वह संदेश पहुंचावे। परन्तु जब सब आगे हुए तो वह केवल इतना ही कह सका कि खजानची साहब कुछ निवेदन करना चाहते हैं, इन्हें कमिश्नर ने बुलाया था। अब क्या था, सारी बला कोषाध्यक्ष के सिर पर टूट पड़ी। कभी सिर खुजलाते कभी गला साफ करते स्वामी जी पांच मिनट तक आश्चर्य से देखते रहे फिर बोले भाई तुम्हारा तो काम करने का समय ही नहीं हैं तुम इसका महत्व नहीं जानते, परन्तु मेरा समय अमूल्य है, जो कहना है शीघ्र कहो। कोषाध्यक्ष, महाराज अगर सख्ती न की जाए तो क्या हर्ज है इससे अच्छा प्रभाव पड़ता है, अंग्रेजों को अप्रसन्न करना ठीक नहीं...यह शब्द अटक-अटक कर कठिनता से उसके मुख से निकले।

स्वामी जी हंस कर बोले अरे बात क्या थी जिसके लिए मेरा इतना समय व्यर्थ खोया, साहब ने कहा होगा तुम्हारा पंडित खण्डन करता है, व्याख्यान बंद हो जाएंगे इत्यादि। अरे भाई मैं कोई हौआ तो नहीं कि तुझे खा लूंगा, उसने तुम से कहा तू मुझे सीधा कह देता। होते-होते व्याख्यान का समय आ गया, स्वामी जी सत्य के बल पर बोलने लगे। पूर्व दिन वाले अंग्रेज सब उपस्थित थे केवल स्काट साहब नहीं आए थे। सभी चुपचाप सुनते रहे, ऋषि ने कहा लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा, अरे चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।

इसके पश्चात एक वाक्य को पढ़ा, जिसमें यह कहा था कि आत्मा को न शस्त्र छेद सकता है, न अग्नि जला सकती है, गर्जते हुए सिंह नाद से बोले यह शरीर अनित्य है इसकी रक्षा के लिए अधर्म करना व्यर्थ है, जिस मनुष्य का जी चाहे इसे नाश कर दें। फिर चारों ओर अपनी तीक्ष्ण नेत्र ज्योति डाल कर गर्जती हुई वाणी से कहा कि परन्तु वह शूरवीर मुझे दिखाओ जो मेरी आत्मा को नाश करने का दावा करता हो। जब तक ऐसा वीर संसार में दिखाई नहीं देता मैं सत्य कहने से कभी नहीं डरूंगा। यह है सत्यवादी दयानन्द का स्वरूप।

महर्षि ने आचार की परिभाषा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में लिखा है जो सत्य भाषणादि कर्मों का आचरण करना है वही वेद और स्मृति में कहा आचार है। संस्कारविधि के गृहस्थप्रकरण में आप लिखते हैं कि मनुष्यों को योग्य है कि काम से अर्थात् झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण वा निन्दा स्तुति के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करें और अधर्म से चाहे चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो उसे भी ग्रहण न करें। अनित्य के लिए नित्य को छोड़ना अतीव दुष्ट कर्म है। यदि हम भी अपने जीवन में उजाला करना चाहते हैं तो जीवन में सत्य को उतारने का प्रयास करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

महर्षि के जीवन में आये दो स्वामी पूर्णानन्द पर विवेचना

-ले० श्री खुशहाल चन्द्रआर्य गोबिन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गान्धी रोड कोलकता

मैंने महर्षि दयानन्द कृत ''संस्कार विधि'' जो वैदिक पुस्तकालय, दयानन्दाश्रम, अजमेर से छपी है। इसके अन्तिम 5-6 पृष्ठों में महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी लिखी है, जिस में जो स्वामी पूर्णानन्द, स्वामी दयानन्द को सन्यास की दीक्षा दी थी, वही स्वामी पूर्णानन्द, स्वामी विरजानन्द जिसने स्वामी दयानन्द को लगभग तीन साल पढ़ाया था, उसका भी गुरू था। ऐसा लिखा है। परन्तु स्वामी सत्यानन्द कृत, स्वामी दयानन्द की जीवनी जिसका नाम ''श्री मद्दयानन्द-प्रकाश'' है। उसको पढ़ने से ज्ञात होता है कि स्वामी दयानन्द को सन्यास की दीक्षा देने वाला स्वामी पूर्णानन्द और स्वामी विरजानन्द का गुरू स्वामी पूर्णानन्द, अलग-अलग दो संन्यासी थे, पर उनका नाम एक ही था। श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश में इसी भाँति लिखा है-

यह घटना सन् 1848 की है जब मूलशंकर (महर्षि का जन्म का नाम) सच्चे शिव की खोज में नर्मदा के तट पर घूम रहा था और किसी ब्रह्मचारी ने उसको ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर उसका नाम ब्र. शुद्ध चैतन्य रख दिया। परन्तु मूलशंकर संन्यास की दीक्षा लेना चाहता था, कारण ब्रह्मचारी रहने में उसको रसोई बनाना व बर्तन मांजने का झंझट रहता था जिससे उसको योग-साधना करने के लिए समय कम मिल पाता था, इसलिए वह सन्यास लेना चाहता था। एक दिन शुद्ध चैतन्य ने किसी से सुना कि चाणोद से डेढ़ कोस के अन्तर पर जंगल में एक दाक्षिणात्य दण्डी स्वामी आकर विराजे हैं। वे बड़े विद्वान् उत्तम सन्यासी है। उनके साथ एक ब्रह्मचारी भी है। तब शुद्ध चैतन्य जी अपने उपर्युक्त मित्र दक्षिणी पण्डित को साथ लेकर प्रशंसित दण्डी जी की सेवा में उपस्थित हुए और समादर नमस्कार करने के पश्चात् पास बैठकर उन्होंने वार्तालाप करना आरम्भ कर दिया। ब्रह्म विद्या सम्बन्धी अनेक विषयों पर बातचीत होती रही। अन्त में श्री चैतन्य को निश्चय हो गया कि दण्डी जी महाराज और सभी ब्रह्मचारी दोनों ब्रह्मविद्या में निपुण है। दण्डी जी का शुभ नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। शुद्ध चैतन्य जी के हृदय में उनसे सन्यास ग्रहण करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। तब उन्होंने अपने मित्र पण्डित जी को संकेत किया कि दण्डी जी के सम्मुख उनके सन्यास का प्रस्ताव करें। पण्डित जी ने निवेदन करते हुए कहा-''दण्डी जी महाराज! यह विद्यार्थी, ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य, अति सुशील और विनीत है। ब्रह्मविद्या पढ़ने के लिए अतीव उत्कण्ठित है। परन्तु क्या करे भोजन बनाने के बखेड़े ही में इसका बहुत सा समय व्यर्थ व्यय हो जाता है, जिससे यथारूचि विद्याध्ययन नहीं कर पाता। इसकी कामना के अनुसार आप कृपा करके इसे चतुर्थ प्रकार का सन्यास दे दीजिये।''

यह प्रार्थना सुनकर, उक्त स्वामी जी ने, शुद्ध चैतन्य जी की भरपूर युवावस्था के कारण उन्हें सन्यास देने में एक बार तो मन हटा लिया। पर पण्डित जी के अधिक आग्रह से सन्यास की अनुमति देते हुए यह कहा कि यदि ये पूर्ण वैराग्यवान् है तो किसी गुजराती सन्यासी से दीक्षा लें। हम तो महाराष्ट्री हैं। पण्डित जी बोले-''महाराज दक्षिणी सन्यासी, गौड़ों को जो पंच द्राविड़ों से बाहर है, सन्यास दे देते हैं, तो आप इसे सन्यास क्यों नहीं देते ? यह गुर्जर ब्राह्मण है। और यह तो आप जानते ही हैं कि गुर्जर पंच द्राविड़ों में नहीं गिने जाते हैं।'' पण्डित जी की अन्तिम युक्ति से दण्डी जी ने सन्यास देना स्वीकार कर लिया और अति प्रसन्नता प्रकाशित करते हुए श्री शुद्ध चैतन्य मुमुक्षु को व्रत उपवास और जपादि क्रियानुष्ठान करने का आदेश किया।

दो दिन तक जपादि साधनों को यथा विधि करके तीसरे दिन ब्रह्मचारी जी दण्डी जी की सेवा में उपस्थित हुए। उनसे उसी दिन श्राद्ध कराके, दण्डी स्वामी जी ने विधिपूर्वक सन्यास धारण कराया। हाथ में दण्ड अवलम्बन कराकर उनका नाम ''दयानन्द सरस्वती'' उदघोषित किया। विनय से नम्रसिर, नव शिष्य को स्वामी पूर्णानन्द जी ने यतियों के धर्म बताए, सन्यास की रीति-नीति का उपदेश दिया। आश्रम-मर्यादा और विद्योपार्जन, जप-तप आदि के करने की शिक्षा दी। वे कई दिन तक गुरू चरणों में बैठकर बड़ी विनीतता से ब्रह्म विद्या के ग्रन्थ पढ़ते रहे। अब, उन्होंने गुरू-आदेश के अनुसार विद्याराधना में विघ्नकारी जानकर दण्ड के विसर्जन कर दिया। स्वामी पूर्णानन्द श्रृंगेरी मठ से द्वारिका को जाते हुए मार्ग में कुछ दिनों के लिए ''चाणोद'' में ठहर गये थे। कुछ दिन के पश्चात् जब वहाँ से चलने लगे तो उनके नूतन शिष्य दयानन्द ने बड़ी पूजा और सम्मान से गुरू चरणों में प्रणाम किया। स्वामी जी महाराज बड़े वात्सल्यभाव को प्रदर्शित करते हुए उनसे विदा होकर द्वारिका दर्शन को चल पड़े। स्वामी दयानन्द सरस्वती पीछे कई दिनों तक चाणोद ही में टिके रहे।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वामी पूर्णानन्द जो स्वामी विरजानन्द का गुरू था, उसने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में काफी काम किया था। यह भी कहा जाता है कि सन् 1856 में मथुरा के जंगल में एक बड़ी सभा स्वतन्त्रता-संग्राम की योजना बनाने के लिए हुई थी उसमें उत्तर भारत के काफी राजा-महाराजा, नबाब-बादशाह तथा हरियाणा की खाप पंचायत ने भाग लिया था। उसकी अध्यक्षता चक्षुहीन स्वामी विरजानन्द ने की थी। उसमें स्वामी विरजानन्द ने बड़ा जोशीला भाषण दिया था जिससे स्वतन्त्रता-संग्राम का काम आरम्भ हो गया। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि स्वामी दयानन्द ने भी अज्ञात वास के रूप में अपना नाम उजागर किये बिना, छिपकर भाग लिया था। तभी उनको स्वामी पूर्णानन्द का पता चला और उनको स्वामी जी ने अनुरोध किया कि आप मेरे गुरू बन कर मुझे पढ़ावें। परन्तु स्वामी पूर्णानन्द ने अपनी वृद्ध अवस्था बतलाकर पढ़ाने के लिए असमर्थता प्रकट की और स्वामी विरजानन्द जो उनका शिष्य था, उसके पास स्वामी दयानन्द को पढ़ने के लिए मथुरा भेज दिया। परन्तु श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश में ऐसा कुछ नहीं लिखा। उसमें इसी भाँति लिखा है।

ब्र० शुद्ध चैतन्य सन् 1848 में स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा लेकर और अपना नया नाम ''स्वामी दयानन्द सरस्वती'' रखा कर, यह हरिद्वार होते हुए उत्तराखण्ड की ओर केदार घाट चले गये। वहाँ वे गंगागिरी, रूद्र प्रयाग, शिवपुरी, गुप्तकाशी, गौरी कुण्ड, ओखी मठ, जोशी मठ, आदि स्थानों पर घूमते हुए तथा अनेक दुःख व कष्टों को सहन करते हुए सन् 1857 में मुरादाबाद आ गये। यहाँ से स्वामी जी पुनः नर्मदा नदी के तट पर चले गये और वहाँ अच्छे-अच्छे साधु-सन्तों, सन्यासी-महात्माओं से मिलते हुए सच्चे गुरू की खोज में घूमते रहे। स्वामी जी वहीं लगभग तीन साल रहे और वहीं उन्होंने कई लोगों से स्वामी विरजानन्द का बिमल-यश श्रवण किया और फिर विशेष ज्ञान की प्राप्ति की जिज्ञासा से स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द से मिलने के लिए मथुरा आ पहुंचे।

इस लेख में लेखक ने दोनों पक्ष ही लिख दिये हैं, पर सही श्री मद्दयानन्द-प्रकाश का ही लगता है। आर्य जगत् के अधिकतर विद्वान् जो स्वामी दयानन्द के तीन साल के अज्ञात वास को और स्वामी जी ने सन् 1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग किया, ऐसा नहीं मानते हैं। श्री मद्दयानन्द-प्रकाश के आधार पर स्वामी पूर्णानन्द का एक ही व्यक्ति होना असम्भव प्रतीत होता है। कारण महर्षि की जीवनी पढ़ने से ज्ञात होता है कि पहला पूर्णानन्द दक्षिण भारत का द्राविड़ ब्राह्मण है, जिसकी उम्र अधिक नहीं जान पड़ती, पर दूसरा पूर्णानन्द उत्तर भारत का सन्यासी है जो 108 वर्ष का वृद्ध है। इसका अन्दाजा इसी से लगता है कि जब स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द जी के पास पहुँचे थे तब स्वामी विरजानन्द की आयु 90 वर्ष की थी। इसलिए यह निश्चित ही समझना चाहिए कि दोनों पूर्णानन्द अलग-अलग सन्यासी थे।

यहाँ यह लिखना भी उचित है कि यदि स्वामी दयानन्द और स्वामी विरजानन्द का एक ही गुरू स्वामी पूर्णानन्द होता, तो स्वामी दयानन्द अपने गुरू विरजानन्द के पास लगभग तीन साल रहे थे, तब कभी तो अपने गुरू के बारे में परस्पर बात चीत की होती। परन्तु ऐसी वार्ता का जिक्र इन तीन साल की अवधि के बीच कभी नहीं आया। इसलिए इन दोनों के गुरू अलग-अलग ही थे। यही मानना उचित है।

सच्चे शिव की प्राप्ति

-ले० विद्यासागर शास्त्री, आदर्श नगर 533/11 कैथल (हरियाणा)

(गतांक से आगे)

परन्तु मैंने तो व्रत लिया है, इसलिए आज जागना ही है। पिता जी ने तो कहा था कि आज जो सो जाएगा, उसे शिव जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे और पाप लगेगा। और ये भी कहा था कि सारी रात शिव जी की चार बार पूजा की जायेगी। पुजारी तो सो गये है, अब पूजा कौन करेगा ? इसलिए मैं ही पूजा करता हूँ जिससे मैं अकेला ही पुण्य का भागी बनूँगा। और अवश्य ही आज भगवान् शिव जी के दर्शन करूँगा। (पूजा की थाली से कुछ पुण्य लेकर मूर्ति पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाता है और स्वस्तिक आसन लगाकर ध्यानस्थ होता हुआ शिव जी से प्रार्थना करता है)

अयि दयालु महेश! कृपालु हे!
कर कृपा भव दु:ख समुद्र से।
सपदि पार करो मुझ बाल को,
शरण-आगत हूँ सुचि भाव से॥
विपुल रोग करें नित जो प्रभो!
विषय भोग नहीं सुख चाहता।
मरण-जन्म-दुखादि हरे जले,
तव विमुक्ति पद प्रभु! चाहता॥
मम विभो! जननी जनिता सखा,
सकल जीवन के भुवि वित्त हो।
हृदय-शोक-विभंजन ईश हे!
अभय संसृति से मम चित्त हो॥
सतत-याकुल हूँ तव दर्शने,
शुचि निरंजन मंगलमूल हे!
शरण-आगत हे! इस बालको,
सपदि दर्शन दो मम ईश हे!

(मूलशंकर प्रार्थना में तल्लीन हो जाता है)

चतुर्थ दृश्य

(रात्रि तीसरा प्रहर, दीपक के प्रकाश से मन्दिर आलोकित हैं, शिव जी की प्रतिमा पर धतूरा आदि के फूल पड़े है। नैवेद्य तथा भोज्यपदार्थ मिठाई आदि चढ़ावा भी पड़ा हुआ है। जो भक्तों ने श्रद्धापूर्वक चढ़ाया था। इतने में ही दो तीन चूहे बिल से निकलकर मूर्ति पर चढ़े हुए चढ़ावों को खाने लगते है।)

मूलशंकर:-(चकित होकर) है ? यह क्या है ? ये छोटे से क्षुद्र जन्तु ? और त्रिशूलधारी भगवान शिव की मूर्ति पर ? भगवान का इतना घोर अपमान ? इन्होंने तो चढ़ावा भी दूषित कर दिया है। अपने क्षुद्र पैरों से भगवान की मूर्ति को भी खराब कर दिया। ओह ? कितना घोर अपमान ? परन्तु यह भगवान शिव की मूर्ति तो हिलती तक नहीं। संभव है यह सच्चे शिव न हो। पिता जी तो मुझे बताया करते थे कि शिव जी बहुत शक्तिशाली है, उनके पास पिनाक नाम का धनुष है और पशुपत अस्त्र है। जिस के एक बार चलने से संसार प्रलय छा जाती है। त्रिधुरासुर के तीन नगरों को अपने प्रचण्अग्नि के तीसरे नेत्र से भस्म कर दिया था। जिन की पवित्र मूर्ति कभी शान्त कभी उग्र होती है। भगवान शिव जी इतने महान पराक्रमी है फिर भी इन शूद्र चूहों का तिरस्कार कैसे सहन करते है ? कहाँ गया है वह पराक्रम ? जो इन चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहे ? जो अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता, वह औरों की रक्षा कैसे करेगा ? ज्ञात होता है कि यह सच्चा शिव नहीं है, और न ही इसमें शक्ति भी है। (उस का अपने में समाधान न मिलने पर मूलशंकर (अपने पिता को जाता है।) पिता जी! पिता जी! उठिए! शीघ्र जागिए! शिव जी यदि बहुत पराक्रमी है इसलिए ही उन चूहों को भगाने में असमर्थ है। (अम्बाशंकर जाग कर मूलशंकर को पूछते हैं,

अम्बा:-पुत्र, क्या बात है ? क्यों घबरा रहा है ? क्या तुम्हें नींद सता रही ? क्या तुमने कुछ देखा, जिससे तू चकित मालूम हो रहा ?

मूलशंकर:-पिता जी! जब आप और ये पुजारी सब सो गये, तब मन्दिर की चारों दीवारें शान्त थी, परन्तु उस समय चूहे भगवान शिव जी के ऊपर चढ़कर चढ़ावे को आनन्द से खाकर विष्टा कर गये।

अम्बाशंकर-पुत्र, यह सब मैं क्या सुन रहा हूँ।

मूलशंकर:-पिता जी! आप कहा करते थे, कि शिव जी बहुत परक्रमी हैं, अब उनका वह पराक्रम कहाँ गया ? जो चूहों को भी यथा न सके ?

अम्बाशंकर:-पुत्र! यह तो शिव जी की केवल मूर्ति ही है। वे तो हमेशा कैलास पर्वत पर विराजमान रहते हैं। प्रसन्न होने पर भक्तों पर कृपा करते है। कलियुग में भगवान साक्षात् दर्शन नहीं देते, इसलिए मूर्ति की ही पूजा की जाती है। मूर्ति की पूजा करने से शिव जी प्रसन्न होते हैं। इसलिए भावना ही करनी चाहिये। तर्क वितर्क नहीं करना चाहिये।

मूलशंकर:-भावना से कर्त्तव्य ऊँचा होता है पिता जी! और मेरी कर्त्तव्य में ही निष्ठा है (पिता जी को मौन देख कर) जब तक मैं अपनी आँखों से सच्चे शिव जी के दर्शन न कर लूँ, तब तक मैं किसी भी मूर्ति की पूजा नहीं करूँगा।

अम्बाशंकर:-नहीं पुत्र! ऐसा न करना।

मूलशंकर:-अब मेरा इन मूर्तियों से विश्वास उठ गया है। पिता जी! मुझे अब सच्चे शिव की पूजा से ही सन्तोष होगा।

अम्बाशंकर:-बस पुत्र, अधिक न बोलें। (सिपाही को संकेत से बुलाकर) जाओ इसे घर छोड़ आओ।

(मूलशंकर घर जा के व्रत तोड़कर भोजन कर लेता है)

एक बार फिर आना होगा....

-ले० हरि कुमार साहू पूर्व मंत्री, आर्य समाज, गोंड़पारा बिलासपुर

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

खूब हो रही पत्थर-पूजा, निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए-नए पाखण्ड रचा कर, ढोंगी दलदल बाबा फूले॥
ऐसे धूर्त ठगों को अब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

भारत में हिंदी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति ?
जन-मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसी दो सन्मति॥
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुन: सजाना होगा।
दयानन्द ! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

नारी आज भोग्या बन कर भारत भर में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है॥
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या-भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा॥
बेटी के हत्यारों को अब फाँसी पर लटकाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

भारत में कट रहीं आज भी नित-नित लाखों गौ माताएँ।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएँ ? किसे बताएँ ??
जन-जन में जा कर **गौ करूणा निधि** का अलख जगाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

भूले मात पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रों पर चादर॥
दसवाँ, मृतक भोज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी॥
हो आहार विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल, थल, वायु हो रहे दूषित, यज्ञ मात्र से होगी राहत॥
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

नया नाम डेटिंग काले कर, खूब वैश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही॥
सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

वेद प्रचारित करने खातिर ईंट, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम ना घबराए॥
वेदों के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा ?
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा॥

पृष्ठ 2 का शेष- संस्कारों का.....

'ज्ञात-चेतना' का क्षेत्र 'वर्तमान काल' तथा वस्तु की समीपता है, 'अज्ञात-चेतना' का क्षेत्र 'भूत तथा भविष्यत्' है, दूरी है। युग का कहना है:'हमें बाधित होकर यह मानना पड़ता है कि 'अज्ञात-चेतना' में 'अतीन्द्रिय-ज्ञान' विद्यमान रहता है, ऐसा ज्ञान जिसमें देश तथा काल का व्यवधान मिट जाता है-भूत तथा भविष्यत् की घटनाओं की सत्ता उसे अपने सामने बिना स्थूल इन्द्रियों के दीखती है, वह दीखना, वह ज्ञान कारण-कार्य के बन्धन से बन्धा नहीं होता, वह ज्ञान कारण-कार्य की सीमा को लांघ जाता है।'

जिन लोगों को पिछले जन्म की स्मृति होती है या जो लोग भविष्य की घटनाओं के लिए भविष्यत्-वाणी कर देते हैं जो कालान्तर में सत्य घटित हो जाती है, या जिनको स्वप्न में ऐसी घटनाएं दीख जाती हैं जो अभी नहीं घटी परन्तु समय आने पर घट जाती है-यह सब ज्ञान 'अज्ञात-चेतना' द्वारा होता है। हमारी 'ज्ञात-चेतना' साधारण तौर पर वर्तमान पर केन्द्रित रहती है, परन्तु जब 'अज्ञात-चेतना' द्वारा होता है। हमारी 'ज्ञात-चेतना' साधारण तौर पर वर्तमान पर केन्द्रित रहती है, परन्तु जब 'ज्ञात-चेतना' शिथिल होकर ढीली पड़ जाती है, जब 'ज्ञात-चेतना' को हर समय जकड़े रखनेवाला तथा कारण-कार्य के नियम में उलझे रहने वाला सजग मन बुद्धिपूर्वक सोचना छोड़ देता है, तब 'अज्ञात-चेतना' को काम करने का अवसर मिल जाता है, और तभी यह चेतना-मन-**'दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकम्'-यज्जयोतिरन्तरमृतम् प्रजासु'-'येनेदं भूतं भुवन भविष्यत् परिगृहीतम्'**-भूत तथा भविष्यत् में भ्रमण करने लगता है, भूत की घटनाओं को मानो प्रत्यक्ष देखता है, भविष्य में होने वाली घटनाओं के भी पार चला जाता है। युग ने अपनी 'जीवन-कथा' में अपनी स्वप्निल-अवस्था की भूत तथा भविष्यत् पर प्रकाश डालनेवाली अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है जिनका उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया। 'प्रत्येक व्यक्ति को पिछले जन्म का अनुभव क्यों नहीं होता है.....' इसके अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें से कुछ निम्न हैं-

(1) इसका यह कारण हो सकता है कि जैसे संगीत की जन्मगत प्रतिभा हर किसी में न होकर किसी-किसी में पाई जाती है, वैसे ही 'अज्ञात-चेतना' की यह असाधारण-शक्ति भी सबमें न होकर किसी-किसी में पाई जाती है। रामानुजम नाम के एक व्यक्ति हुए हैं जो गणित का कितना ही कठिन प्रश्न क्यों न हो उसे हल करने की लम्बी-चौड़ी प्रक्रिया में से गुजरे बिना उसके हल पर पंहुच जाते थे। किसी प्रश्न को हल करने के लिए मस्तिष्क द्वारा सारी प्रक्रिया का करना लाज़मी है, परन्तु उन्हें इस सबकी जरूरत नहीं पड़ती थी। इससे स्पष्ट है कि अतीन्द्रिय रूप में भी ज्ञान प्राप्त होता है-परन्तु इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करना सबके बस की बात नहीं है। जिसे असाधारण-शक्ति प्राप्त हो वही उस ज्ञान का भागीदार हो सकता है।

(2) दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि इस शक्ति का हर-किसी में न होना प्रकृति का 'जीव-शास्त्रीय-सुरक्षा' का एक साधन है। प्रकृति का यह नियम है कि वह ऐसी व्यवस्था रखती है कि जिससे प्राणी की सुरक्षा बनी रहे। अगर हर-किसी को विगत जन्म की घटनाएं स्मरण आती रहें, तो यह जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए। जीवन को अस्त-व्यस्त न होने देने के लिए प्रकृति की यह एक तरकीब है जिससे पिछला याद नहीं रहता।

(3) तीसरा कारण यह भी हो सकता है कि यद्यपि 'अज्ञात-चेतना' द्वारा अतीन्द्रिय-ज्ञान की शक्ति का बीज हर-किसी में विद्यमान है, परन्तु कुछ इने-गिने व्यक्तियों को छोड़कर वह दूसरों में क्षीण हो गया है।

(4) यह भी कहा जा सकता है कि 'ज्ञात-चेतना' का उपयोग करने के हम इतने आदी हो गए हैं कि 'अज्ञात-चेतना' को काम करने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता।

(5) कई दार्शनिकों का कहना यह भी है कि मानव अभी विकास की उस स्थिति में नहीं पहुंचा जहां पहुंचकर 'अतीन्द्रिय-ज्ञान' उसके लिए स्वाभाविक हो जाए, और वह 'अज्ञात-चेतना' द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त करने लगे जिसे अभी कुछ इने-गिने लोग ही स्वाभाविक रूप से प्राप्त करने की शक्ति रखते हैं। हो सकता है कि मानव का विकास होते-होते 'अज्ञात-चेतना' से ज्ञान प्राप्त कर सकना हर-किसी के लिए संभव हो जाए।

(6) जिन लोगों को पिछले जन्म की घटनाएं स्मरण हो आती है उसका कारण यह हो सकता है कि उनकी मृत्यु किसी भयंकर घटना से हुई होती है, और उस भयंकरता का उन पर अमिट प्रभाव पड़ा होता है। प्राय: देखा गया है कि जिन व्यक्तियों को गत-जन्म की स्मृति हो आती है वे यह बतलाते हैं कि उनकी मृत्यु किसी दुर्घटना से हुई थी-किसी को कत्ल किया गया था, कोई नदी में डूब मरा था, किसी को अन्य किसी भयंकर घटना का शिकार होना पड़ा था। यह समाधान कुछ-एक दृष्टान्तों के लिए ही दिया जा सकता है, सब दृष्टान्तों के लिए नहीं।'

महाभारत (अनुशासन पर्व 227-32.33) में कहा गया है-**ये मृता: सहसा मर्त्या: जायन्ते सहसा पुन:, तेषां पौराणिको भाव: कंचित् कालं हि तिष्ठति। तस्मात् जातिस्मरा: लोके जायन्ते बोधसंयुता:, तेषां विवर्धतां संज्ञा स्वप्नवत् सा प्रणश्यति॥** अर्थात् जो व्यक्ति सहसा, अचानक किसी दुर्घटनावश मर जाते हैं, और एकदम ही उनका पुनर्जन्म हो जाता है, उनका पुनर्जन्म का पुराना संस्कार कुछ समय तक बना रहता है। यह कारम है कि संसार में जो 'जातिस्मर'-अपने पिछले जन्म का स्मरण रखने वाले-उत्पन्न होते हैं, वे ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों उनकी पिछले जन्म की स्मृति नष्ट होती जाती है। लगभग इसी प्रकार के विचार गीता (8-6) में भी व्यक्त किए गए हैं-

यं-यं वाऽपि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावित:॥

हे कुन्ती के पुत्र अर्जुन! जिस-जिस भावना को स्मरण करते हुए मनुष्य अन्तकाल में शरीर को छोड़ता है उस-उस भावना में रंगा होने के कारण वैसे ही कलेवर को प्राप्त होता है।

आर्य समाज सान्ताक्रुज में वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज (पं.) मुम्बई द्वारा गुरुवार दि. 19 सितम्बर से रविवार दि. 22 सितम्बर, 2013 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज के बृहद सभागार में वेद प्रचार समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन सायं 6.30 से 9.30 बजे तक ''चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ'' तथा भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पो. विनय विद्यालंकार जी (उत्तराखण्ड) तथा विशेष वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो. विनय विद्यालंकार जी (उत्तराखण्ड) थे। यज्ञ में वेदपाठी ब्रह्मचारी-गुरूकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय रामलिंग-येडशि तथा ब्राह्मणवृन्द पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारंजन पाठक थे।

इसी क्रम में रविवार दि. 22 सितम्बर, 2013 को चार दिवसीय चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति प्रात: 9.30 बजे हुई। प्रात: राश के पश्चात् 10.00 बजे से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तद्नन्तर सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प्रभाकर शर्मा एवं कुमार योगेश आर्य ने प्रभु भक्ति एवं स्वामी दयानन्द पर आधारित सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। प्रो. विनय विद्यालंकार जी ने वेद मंत्रों की सुन्दर व्याख्या करते हुए तर्कों प्रमाणों तथ्यों उदाहरणों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद का प्रचार प्रसार किया था तथा आर्य समाज की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की थी अत: हम सबको वेदों का सार्वजनिक प्रचार प्रसार करना होगा। ईश्वर एक हैं उसी एक शुद्धतम ईश्वर की उपासना करके ही लोग कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। आप के वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत सारगर्भित, प्रेरणादायक प्रवचन हुए। इस अवसर पर उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक आपदा के सहायतार्थ अब तक एकत्र किए गए तीन लाख रुपए का चैक उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दिया गया।

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ के प्रधान श्री चन्द्रगुप्त आर्य तथा श्री लालचन्द्र आर्य आमंत्रित अतिथिओं का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। प्रधान जी ने सभी उपस्थित विद्वानों, अतिथियों, श्रोताओं एवं कार्यकत्ताओं तथा सहयोगियों एवं दानदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। महामन्त्री श्री संगीत आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया। शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात सभी ने प्रीति भोज का आनन्द लिया।

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाज़ार) लुधियाना का वार्षिक उत्सव दिनांक 27-10-2013 रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री मनीष मदान जी व श्रीमती शालू मदान जी ने ज्योति प्रज्जवलन से किया। मंगलयज्ञ की पूर्णाहुति पंडित रमेश कुमार शास्त्री ने करवाई। आर्य प्रतिनिधि सभा से आए हुए उपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने कहा कि हमें महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को नहीं भूलना चाहिए। चण्डीगढ़ से आए हुए भजनोपदेशक श्री उपेन्द्र शास्त्री जी ने मधुर भजनों द्वारा सबका मन मोहित कर दिया।

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेंडरी स्कूल पुराना बाजार लुधियाना के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री रणवीर शर्मा, महामन्त्री श्री सुशील मोदगिल, कोषाध्यक्ष श्री राजिन्द्र शर्मा, स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा, मन्त्राणी उमा शर्मा, कोषाध्यक्षा इन्दिरा हाण्डा, श्री सुनील शर्मा, श्री विजय सरीन, श्रीमती रमेश महाजन एवं श्री रवि महाजन, श्रीमती सविता शर्मा, आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल की प्रिंसीपल ज्योति जोशी तथा अन्य अध्यापिका वर्ग आदि उपस्थित थे। **-राजेश शर्मा प्रधाना स्त्री आर्य समाज**

महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) ढन मुहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन मुहल्ला जालन्धर का 49वां वार्षिक उत्सव 11 नवम्बर 2013 से 17 नवम्बर 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी डा० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (हरिद्वार) स्वामी सूर्यदेव जी बठिंडा, प्रिंसीपल रमेश जीवन जी चण्डीगढ़, श्री देवराज जी कपूरथला तथा श्री राजेश प्रेमी जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती जी होंगे। प्रात: का कार्यक्रम 7.30 से 9.30 तथा सायंकाल का सायं 4.30 से 6.30 बजे रहेगा। दोनों समय यज्ञ होगा। कृपया सपरिवार इष्ट मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाएं। **-कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान प्रबन्धक कमेटी**

आर्य समाज मंदिर धूरी में दीपावली का पर्व मनाया गया

आर्य समाज मंदिर धूरी में दिनांक 1.11.2013 दिन शुक्रवार को ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम पंडित अमरेश शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ करवाया जिसमें यज्ञ के मुख्य यज्ञमान प्रधान प्रह्लाद आर्य जी, रमेश आर्य जी, सोमप्रकाश आर्य जी, स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती कृष्णा आर्य जी एवं सभी अधिकारीगण इस यज्ञ में उपस्थित महानुभावों ने आहुतियां डालकर विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की। सबसे पहले आर्य कालेज के विद्यार्थियों का मधुर भजन हुआ। रघुनाथ शर्मा, वासुदेव आर्य व आर. पी. शर्मा जी ने दयानन्द के जीवनी पर विचार रखे। पंडित अमरेश शास्त्री जी ने वेदों की शिक्षा ऋषि दयानन्द द्वारा किए गए समाज के सुधार समाजिक कार्यों के बारे में बताया एवं आर्य समाज के मंत्री रामपाल आर्य जी ने मंच का संचालन करते हुए स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि दी और विचार रखे। आर्य समाज के प्रधान प्रह्लाद आर्य जी ने आए हुए सभी आर्यों का धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे महान पुरुष से हमें श्रेष्ठ बनने के लिए हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस अवसर पर आर्य स्कूल, यश चौधरी, आर्य कालेज के बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और ऋषि भक्ति व वेद प्रचार के भजन गाए। इस मौके पर, आर्य समाज के मैनेजर, वरिन्द्र गर्ग, यश चौधरी के मैनेजर सतीश आर्य, आर्य कालेज के मैनेजर पवन कुमार गर्ग, प्रधान अशोक जिन्दल, बी. एल. कालिया जी, मोनिका जी, धर्मदेव जी, कुसुम जिंदल, नीगमपाल, मधुबाला जी एवं धूरी की सभी आर्य समाज के सदस्य एवं अधिकारी इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और दीपावली की शुभकामनाएं दी।

लुधियाना में दीवापली के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन

दिनांक 6 नवम्बर 2013 को आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल, लुधियाना में दीपावली के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया और सभी बच्चों ने दीपावली के शुभ अवसर पर अपनी-अपनी कक्षाओं की खूब सफाई और सजावट की। हवन के पश्चात् आर्य स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने ऋषि निर्वाण दिवस के बारे में बच्चों को ज्ञान दिया और महर्षि दयानन्द के बारे में बच्चों को बताया। आर्य स्कूल के वरिष्ठ उप प्रधान श्री रमेश जोशी जी ने भी महर्षि दयानन्द जी के बारे में बताया कि किस तरह उन्होंने हम लोगों के उद्धार के लिए कई बार जहर पिया। महर्षि दयानन्द की चर्चा करते हुए आर्य स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजय पाल दयोड़ा जी ने बच्चों को दयानन्द जी के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। हवन में स्कूल के सभी अध्यापकों और कर्मचारियों ने आहुति डाली। इसमें ब्रांच के इंचारज श्री राकेश कुमार जी और श्रीमती अनुबाला जी के अलावा आर्य स्कूल टीचर एवं अन्य कर्मचारी युनियन के प्रधान श्री जनकराज भगत जी ने भी आहुति डाली। **-प्रिंसीपल श्री विजय पाल अरोड़ा**

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया

3 नवम्बर 2013 को स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में प्रधान रणवीर बत्ता एवं मन्त्री सुनीता मैग्न की अध्यक्षता में महाऋषि निर्वाण दिवस एवं दीवाली दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें आर्य माडल स्कूल के बच्चों ने पूर्ण सहयोग दिया। प्रोग्राम की शुरुआत शास्त्री दयानिधि जी द्वारा किए हुए हवन से हुई जिसमें उपस्थित लोगों ने विश्व शान्ति हेतु हवन में आहुतियां डालीं। समाज के प्रचार मन्त्री एवं आर्य माडल स्कूल के प्रिंसीपल तरसेम गुप्ता ने कहा कि दीवाली वाले दिन ही स्वामी दयानन्द जी ने अपने प्राण त्यागे थे। ऋषि दयानन्द जी ने जातिवाद, सम्प्रदायवाद, छुआ-छूत एवं समाज में औरतों पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई और भारत को एक सूत्र में बांध दिया। मन्त्री सुनीता मैग्न एवं स्कूल के बच्चों ने दयानन्द के जीवन सम्बन्धी भजन सुनाकर लोगों को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। शास्त्री दयानिधि ने भी स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर रणवीर बत्ता, प्रेम पासी, सुनीता मैग्न, अनिल मैग्न, तरसेम गुप्ता, लीला सूद, कृष्णा आर्य, संदीप सूद, रौशन बत्ता, रविन्द्र नाथ गुप्ता, वेद प्रकाश ढींगरा, प्रमोध जैन, पुष्प जैन, सुमन्त तलवानी, विशाखा राम, डा. सुजाता, आस्था, कविता जिन्दल, सीमा पुरी, अंजना, सत्यपाल गुप्ता, प्रणव मैग्न, सोनम शर्मा, सरोज सिंगला आदि उपस्थित थे। **-तरसेम गुप्ता प्रचार मंत्री**

गुरुकुल आश्रम आम सेना में युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

वेद मंत्रों के उद्घोष के साथ विजयादशमी के शुभावसर पर विजयपर्व के रूप में गुरुकुल आश्रम आम सेना में 11 अक्तूबर को शिविर का शुभारम्भ माननीय विधायक नुआपड़ा श्री राजू भाई धोलकिया के करकमलों से उद्घाटन हुआ। प्रात: काल ओड़िशा, छत्तीसगढ़ के नवयुवकों/छात्रों का भीड़ गुरुकुल परिसर में अत्यन्त दर्शनीय था। इस शुभावसर पर जिला शिशु सुरक्षा अधिकारी श्रीमान् बलदेव रथ भी उपस्थित थे। पुज्यपाद् स्वामी धर्मानन्द जी ने आगंतुक नौजवानों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपना उद्बोधन दिया। गुरुकुल आश्रम के तत्त्वावधान में आर्यवीर दल ओड़िशा की ओर से लगभग 200 छात्रों को शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक उन्नति के गुर सिखाए गए। इस विजयादशमी शुभावसर पर शौर्य प्रदर्शन हेतु खरियार रोड़ में विशाल शोभायात्रा एवं नगर भ्रमण का कार्यक्रम अत्यन्त भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन जालन्धर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग माडल टाऊन जालन्धर का **64वां** वार्षिक उत्सव 18-11-2013 से 24-11-2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के उपदेश तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश जी आर्य व श्रीमती रश्मि घई जी के भजन होंगे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ होगा। कार्यक्रम का समय प्रात: 7.00 से 9.00 बजे तथा सायंकाल 6.30 से 8.00 बजे रहेगा। रविवार 24-11-2013 को मुख्य कार्यक्रम होगा जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी करेंगे। आप सभी परिवार व इष्ट मित्रों सहित इस पावन अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। **-अजय महाजन मंत्री आर्य समाज**

साप्ताहिक आर्य मर्यादा, जालन्धर रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

वेद वाणी

अहं च त्वं च वृत्रहन्यं युज्याव सनिभ्य आ।
अरातीवा चिदद्रिवोऽनु नौ शूर मंसते, भद्रा इन्द्रस्य रातयः॥
ऋ० ८।६२।११

विनय-'इन्द्र के दान कल्याणकारी हैं, इन्द्र के दान बड़े कल्याणकारी हैं' इस टेक के साथ मैंने तेरी बहुत गुणगीतियाँ गाई हैं। हे इन्द्र! तेरे दानों की, तेरी देनों की बहुत स्तुतियाँ गाई हैं, पर ये वाचिक स्तुतियाँ बहुत हो चुकीं। अब तो, हे वृत्रहन्! आओ, मैं और तुम मिल जायँ और मिलकर क्रियामयी वाणी द्वारा दुनिया को दान की महिमा दिखलाएँ। कोई भी मेल, कोई भी संयोग, बिना दान-प्रतिदान के नहीं हो सकता। मेरा और तेरा यह संयोग तभी हो सकेगा जब मैं अपना सर्वस्व तुझे दे दूँ और प्रतिदान में तू मेरा अभीष्ट ऐश्वर्य मुझे दे दे; जब मैं अपने सब टेढ़ेपन को, अपने सब विकार को त्याग दूँ और प्रतिदान में हे वृत्रहन्! तू सब विघ्न-बाधाओं को छिन्न-भिन्न करके अपनी समता से, अपनी पवित्रता से मुझे भर दे। यह हमारा संयोग, यह योग, यह योगप्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक तुझसे मुझे मेरे सब अभीष्ट ऐश्वर्य न मिल जायँगे, जब तक मुझे पूर्ण प्राप्ति न हो जायगी। तो आओ, मेरे इन्द्र! तुम भी आगे आओ, मैं आत्म-बलिदान के रास्ते आज तुमसे संयुक्त होने निकला हूँ। मैं एक के बाद एक ऐसे-ऐसे आत्मबलिदान करूँगा कि इन्हें देख दुनिया दहल जायगी। कट्टर से कट्टर अदानियों के हृदय हिल जायँगे। दान के महात्म्य को देखकर यह दुनिया एक बार तो आत्मत्याग के लिए तत्पर हो जायगी। जिन्हें आत्मत्याग में ज़रा भी विश्वास नहीं, जिन्हें आत्मबलिदान में कुछ भी श्रद्धा नहीं, वे भी दान की शक्ति को अनुभव करेंगे, हमारी आत्माहुतियों की महिमा को समझेंगे, तथा हमारे इस दान-प्रतिदान का अनुमोदन करेंगे। तो लो, मैं अपने एक-एक अंग को काट-काटकर तुम्हारे चरणों में रखता जाता हूँ और तुम, हे वज्रवाले! भेदन कर-करके मेरे लिए एक-एक उच्च ऐश्वर्य को देते जाओ। ओह! मेरे इन महान् आत्म-बलिदानों के प्रतिदान में, हे शूर! जब तुम मुझे पूर्ण प्राप्ति करा दोगे, जब मुझे निहाल कर दोगे तब तो यह दुनिया भी कह उठेगी- "निःसंदेह, इन्द्र के दान बड़े कल्याणकारी हैं, इन्द्र के प्रतिदान परम कल्याणकारी हैं।"

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 3 नवम्बर 2013 को ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी थे। स्कूल की प्रिंसीपल सावित्री मैडम ने यजमान बनकर यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर के.एल. आर्य स्कूल के बच्चों ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित कार्यक्रम पेश करके लोगों को आर्य समाज के विषय में जानकारी दी। श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के जीवन का वर्णन करते हुए बताया कि आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार का जो उपकार किया है उस ऋण को हम कभी नहीं चुका सकते। अगर हम संसार का उपकार करना चाहते हैं तो हमें महर्षि के बताए रास्ते पर चलना होगा। इस अवसर पर के. एल. आर्य स्कूल के स्टाफ ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। आर्य समाज के मंत्री श्री जवाहर लाल महाजन ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के पश्चात् जलपान का प्रबन्ध किया गया।

-जवाहर लाल महाजन मंत्री आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।